नियन्त्रित अवलोकन
(CONTROLLED OBSERVATION)

कुछ समय पहले तक अनेक विद्वानों का यह विचार था कि सामाजिक घटनाओं का नियन्त्रित रूप से अध्ययन करना सम्भव न होने के कारण सामाजिक अध्ययनों को विज्ञान की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता। परन्तु आज अनेक ऐसी प्रविधियों का विकास हो चुका है जिनकी सहायता से सामाजिक घटनाओं पर नियन्त्रण रखकर भी उनका अध्ययन किया जा सकता है। नियन्त्रित अवलोकन एक ऐसी ही प्रविधि है जिसके द्वारा अवलोकनकर्ता तथा अध्ययन की जाने वाली घटनाओं और परिस्थितियों को नियन्त्रित करके तथ्यों का संकलन किया जाता है। इसी कारण नियन्त्रित अवलोकन को **'पूर्व-नियोजित अवलोकन'** (Pre-planned Observation), **'संरचित अवलोकन'** (Structured Observation) तथा **'व्यवस्थित अवलोकन'** (Systematic Observation) आदि नामों से भी सम्बोधित किया जाता है। इस सम्बन्ध में यह ध्यान रखना आवश्यक है कि सामाजिक घटनाओं के अध्ययन में किसी भी विशेष परिस्थिति अथवा तथ्य को उस प्रकार नियन्त्रित नहीं किया जा सकता जिस प्रकार प्राकृतिक घटनाओं पर नियन्त्रण स्थापित करके उनका अध्ययन किया जा सकता है। इस दृष्टिकोण से नियन्त्रित अवलोकन एक ऐसी विधि है जिसके अन्तर्गत वास्तविक अवलोकन-कार्य आरम्भ करने से पूर्व, अवलोकन की सम्पूर्ण योजना तैयार करके यह सुनिश्चित कर लिया जाता है कि विभिन्न घटनाओं के प्रतिमानित स्वरूप क्या हैं तथा किस प्रकार उनका व्यवस्थित रूप से अवलोकन करके उनका सही आलेखन किया जा सकता है ? इस प्रकार नियन्त्रित अवलोकन का तात्पर्य दो प्रकार से नियन्त्रण स्थापित करके घटनाओं का अध्ययन करने से है—प्रथम, सामाजिक घटना पर नियन्त्रण तथा दूसरे, अवलोकनकर्ता पर नियन्त्रण।

---

1 "The data are so real and vivid and therefore our feelings about them are so strong that we sometime tend to mistake the strength of our emotions for extensiveness of knowledge."
—J. Bernard, *Fields and Methods of Sociology*, p. 173.

Scanned with CamScanner

(क) परिस्थिति व घटना पर नियन्त्रण (Control over Situation or Phenomena)—नियन्त्रित अवलोकन के अन्तर्गत सर्वप्रथम यह प्रयत्न किया जाता है कि अध्ययन की जाने वाली परिस्थिति अथवा घटना को नियन्त्रित किया जाय। परिस्थिति अथवा घटना पर नियन्त्रण का तात्पर्य यह नहीं है कि उसमें होने वाले किसी भी परिवर्तन को रोक दिया जाय अथवा घटना को कालबद्ध कर दिया जाय। ऐसे नियन्त्रण का तात्पर्य केवल यह है कि अध्ययन की जाने वाली घटनाओं पर इस प्रकार नियन्त्रण स्थापित कर लिया जाय कि आवश्यकता के अनुसार उनमें समय-समय पर परिवर्तन करके उनका अध्ययन किया जा सके। उदाहरण के लिए, यदि हम किसी विशेष ग्रामीण समुदाय पर नवीन विकास कार्यक्रमों के प्रभाव का अध्ययन करना चाहते हैं तो नियन्त्रित अवलोकन के लिए यह आवश्यक है कि सबसे पहले हम यह सुनिश्चित कर लें कि जिस समुदाय पर योजनाओं के प्रभाव का अध्ययन करना है, उसकी विभिन्न इकाइयाँ कौन-सी हैं तथा किन कार्यक्रमों के प्रभावों का अध्ययन किया जाना है ? इसके पश्चात् पहले अन्य योजनाओं के प्रभाव को स्थिर मानते हुए किसी एक योजना के प्रभाव का अध्ययन करना होगा; दूसरे स्तर पर पहली योजना को स्थिर मानकर किसी दूसरी योजना के प्रभाव को देखना पड़ेगा तथा अन्त में इस तथ्य का अवलोकन करना आवश्यक होगा कि उस समुदाय का निर्माण करने वाली विभिन्न इकाइयों के स्वयं अपने व्यवहार विभिन्न योजनाओं की राफलता-असफलता के लिए किस सीमा तक उत्तरदायी हैं ? इसके अतिरिक्त, कृत्रिम ढंग से कोई नई दशा उत्पन्न करके अथवा उसमें परिवर्तन करके उसका अध्ययन करना भी इसी प्रकार के नियन्त्रण का उदाहरण है। उदाहरण के लिए, एक समूह को अपने लोक-गीतों अथवा लोक-नृत्यों का प्रदर्शन करने की प्रेरणा देने के लिए किसी दूसरे समूह के लोक-गीतों को सुनाना अथवा फिल्म द्वारा दूसरे समूह के लोक-नृत्यों का प्रदर्शन करना इसी प्रकार की स्थिति को स्पष्ट करता है।

(ख) अवलोकनकर्ता पर नियन्त्रण (Control on Observer)—नियन्त्रित अवलोकन में अध्ययन-विषय अथवा विभिन्न घटनाओं को नियन्त्रित करने के साथ ही अवलोकनकर्ता पर भी नियन्त्रण स्थापित करना आवश्यक होता है। इसकी आवश्यकता को स्पष्ट करते हुए **गुडे तथा हाट** ने लिखा है कि "सामाजिक अनुसन्धान में अध्ययन-विषय पर नियन्त्रण रख सकना तुलनात्मक रूप से कठिन होता है, अतः अध्ययनकर्ता को कम-से-कम अपने व्यवहारों पर नियन्त्रण अवश्य ही रखना चाहिए।"[1] अवलोकनकर्ता पर नियन्त्रण रखने का तात्पर्य यह है कि कुछ ऐसे उपकरणों तथा प्रविधियों का उपयोग किया जाय जिससे अवलोकनकर्ता मनमाने रूप से अवलोकन-कार्य न कर सके। अनुसूची, साक्षात्कार, निर्देशिका, क्षेत्रीय मानचित्र, टेप रिकॉर्डर तथा अवलोकन-कार्ड आदि इसी प्रकार की प्रविधियाँ और उपकरण हैं। अवलोकनकर्ता पर नियन्त्रण रखने का उद्देश्य अध्ययन को व्यक्तिगत पक्षपात की सम्भावना से बचाना होता है।

जार्ज लुण्डबर्ग ने नियन्त्रित अवलोकन की प्रकृति तथा कार्य-विधि को इसके चार प्रमुख उद्देश्यों के आधार पर स्पष्ट किया है—(1) अवलोकन के अन्तर्गत आने वाली इकाइयों तथा संकलित की जाने वाली सामग्री की इकाइयों को सावधानीपूर्वक परिभाषित किया जाता है। (2) अवलोकन के लिए विशेष प्रकार की सामग्री का चुनाव किया जाता है। (3) अवलोकन के लिए समय, स्थान, व्यक्तियों तथा परिस्थितियों का निर्धारण किया जाता है। (4) उन सभी प्रविधियों और उपकरणों का निर्धारण कर लिया जाता है जिनकी सहायता से अवलोकन-कार्य किया जाना है।[2] वास्तविकता यह है कि किसी भी सामाजिक अध्ययन में नियन्त्रित अवलोकन की विधि उस समय अधिक उपयुक्त होती है जब अध्ययनकर्ता को अपनी किसी परिकल्पना का परीक्षण करना होता है अथवा वह किसी वैज्ञानिक नियम का सत्यापन करना चाहता है। इसके अतिरिक्त, लघु समूहों के अध्ययन, एक विशेष स्थान पर बच्चों के व्यवहारों, किसी विशेष समूह के अन्तर्गत सदस्यों के अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्धों तथा पारस्परिक विचारों और मनोवृत्तियों का अध्ययन करने के लिए भी नियन्त्रित अवलोकन एक महत्वपूर्ण विधि है।

अनेक विद्वानों का विचार है कि नियन्त्रित अवलोकन सामाजिक घटनाओं का अध्ययन करने के लिए एक उपयुक्त विधि नहीं है। इसका कारण यह है कि किसी भी वर्तमान अथवा भावी सामाजिक घटनाओं को पूरी तरह नियन्त्रित नहीं किया जा सकता। समाजशास्त्रियों ने नियन्त्रित अवलोकन को प्रयोगात्मक पद्धति के विकल्प के रूप में विकसित करने का प्रयत्न किया है लेकिन

1 ".....it is rather difficult to control the object under investigation, he must atleast put controls on himself." —Goode and Hatt, *op. cit.*, p. 127

2 George Lundberg, *op. cit.*

Scanned with CamScanner

यह विधि अनुसन्धानकर्ता के व्यवहारों को भी नियन्त्रित करने में अधिक सफल नहीं हो सकी है। ऐसे आरोप पूर्णतया सही नहीं हैं। वास्तव में, इस विधि की सफलता बहुत बड़ी सीमा तक अवलोकनकर्ता की कुशलता और प्रशिक्षण पर निर्भर है। यह भी सच है कि नियन्त्रित अवलोकन के द्वारा समय और धन के अपव्यय से काफी सीमा तक बचा जा सकता है। इसके अतिरिक्त, इस विधि मे अवलोकनकर्ता को अधिक स्वतन्त्रता मिलने के कारण इसके द्वारा प्राप्त निष्कर्ष भी अधिक प्रामाणिक और विश्वसनीय होते हैं। यही कारण है कि कुछ विशेष क्षेत्रों में किये जाने वाले अध्ययन अनियन्त्रित अवलोकन के द्वारा ही समुचित रूप से किये जा सकते हैं।

नियन्त्रित तथा अनियन्त्रित अवलोकन में अन्तर (Difference between Controlled and Uncontrolled Observation)

नियन्त्रित तथा अनियन्त्रित अवलोकन की प्रकृति तथा इनके विभिन्न स्वरूपों को देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि इन दोनों विधियों की प्रकृति एक-दूसरे से काफी भिन्न है। विभिन्न दृष्टिकोणों से इनके बीच पायी जाने वाली प्रमुख भिन्नताओं को संक्षेप में निम्नांकित रूप से समझा जा सकता है—

(1) नियन्त्रित अवलोकन के अन्तर्गत अध्ययन की जाने वाली घटनाओं अथवा परिस्थितियों को नियन्त्रित करके उनका अवलोकन किया जाता है, जबकि अनियन्त्रित अवलोकन में घटनाओं अथवा परिस्थितियों पर अवलोकनकर्ता का कोई नियन्त्रण नहीं होता। अनियन्त्रित अवलोकन में किसी उपकरण की सहायता से घटनाओं में परिवर्तन उत्पन्न करके उनका अध्ययन करने का प्रयत्न नहीं किया जाता बल्कि घटनाओं को बिल्कुल उसी रूप में देखा जाता है जैसी कि वे वास्तव में हैं।

(2) नियन्त्रित अवलोकन में स्वयं अवलोकनकर्ता पर भी इस प्रकार नियन्त्रण लगाने का प्रयत्न किया जाता है जिससे वह एक निश्चित ढंग तथा निर्धारित प्रविधियों के द्वारा ही अवलोकन-कार्य कर सके। इसके विपरीत, अनियन्त्रित अवलोकन में अवलोकनकर्ता पर कोई नियन्त्रण नहीं होता। इस दृष्टिकोण से अनियन्त्रित अवलोकन तुलनात्मक रूप से अधिक स्वतन्त्र होता है।

(3) नियन्त्रित अवलोकन के अन्तर्गत अवलोकनकर्ता घटनाओं का अध्ययन करने के लिए एक कृत्रिम वातावरण बनाने का प्रयत्न करता है जिसके फलस्वरूप अक्सर अवलोकन की स्वाभाविकता नष्ट हो जाती है। दूसरी ओर, अनियन्त्रित अवलोकन में इस प्रकार कोई कृत्रिमता अथवा बनावटीपन नहीं होता।

(4) नियन्त्रित और अनियन्त्रित अवलोकन इस दृष्टिकोण से भी एक-दूसरे से भिन्न हैं कि नियन्त्रित अवलोकन के अन्तर्गत सम्पूर्ण अवलोकन-कार्य के लिए पहले से ही एक योजना बना ली जाती है, जबकि अनियन्त्रित अवलोकन में ऐसी किसी पूर्व-योजना की आवश्यकता नहीं होती। अनियन्त्रित अवलोकन के अन्तर्गत अध्ययनकर्ता स्वयं को तथ्यों के ऊपर छोड़ देता है। इसका तात्पर्य यह है कि वह किसी भी समय, किसी भी ढंग से अथवा किसी भी क्षेत्र में घटनाओं का अवलोकन करने के लिए स्वतन्त्र होता है।

(5) नियन्त्रित अवलोकन के लिए कुछ विशेष साधनों तथा उपकरणों को उपयोग में लाना आवश्यक होता है। जैसे—अवलोकन अनुसूची, क्षेत्रीय मानचित्र, टेप रिकॉर्डर तथा कैमरा आदि। इसके विपरीत, अनियन्त्रित अवलोकन के अन्तर्गत ऐसे यन्त्रों, उपकरणों अथवा साधनों के प्रयोग की कोई आवश्यकता नहीं होती क्योंकि अवलोकनकर्ता को प्रत्येक घटना को देखने के लिए काफी समय मिल जाता है।

(6) नियन्त्रित अवलोकन में विभिन्न घटनाओं पर नियन्त्रण होने के कारण इसके द्वारा न तो किन्हीं गोपनीय तथ्यों का संग्रह करना सम्भव होता है और न ही किसी विषय का बहुत सूक्ष्म रूप से अवलोकन किया जा सकता है। दूसरी ओर, अनियन्त्रित अवलोकन के अन्तर्गत सहभागी अथवा असहभागी दोनों विधियों से अत्यधिक गहन और सूक्ष्म अध्ययन करना सम्भव होता है।

(7) अध्ययन की विश्वसनीयता के आधार पर यह स्वीकार करना होगा कि नियन्त्रित अवलोकन में अवलोकनकर्ता के व्यवहारों पर नियन्त्रण होने के कारण वैयक्तिक पक्षपात की सम्भावना बहुत कम हो जाती है। इसके विपरीत, अनियन्त्रित अवलोकन में अवलोकनकर्ता पर कोई नियन्त्रण न होने के कारण वैयक्तिक पक्षपात की सम्भावना अधिक रहती है। इस दृष्टिकोण से नियन्त्रित अवलोकन की तुलना में अनियन्त्रित अवलोकन अधिक वस्तुनिष्ठ है।

Scanned with CamScanner

(8) नियन्त्रित तथा अनियन्त्रित अवलोकन का कार्यक्षेत्र भी एक-दूसरे से भिन्न है। साधारणतया नियन्त्रित अवलोकन केवल तभी उपयुक्त होता है जब अध्ययन-समूह छोटे आकार का हो अथवा किसी विषय के विशेष पक्ष का ही अध्ययन किया जा रहा हो। इसके विपरीत, अनियन्त्रित अवलोकन के द्वारा न केवल विस्तृत समूहों का अध्ययन करना सम्भव है बल्कि एक विषय अथवा समस्या से सम्बन्धित सभी पक्षों का एक साथ अवलोकन किया जा सकता है।

सामूहिक अवलोकन
(COLLECTIVE OBSERVATION)

अनियन्त्रित तथा नियन्त्रित अवलोकन की विवेचना से स्पष्ट हो जाता है कि इनके अन्तर्गत अवलोकन एक व्यक्ति द्वारा साधारणतया वैयक्तिक स्तर पर ही किया जाता है। यही कारण है कि ऐसे अवलोकन की सफलता बहुत बड़ी सीमा तक अवलोकनकर्ता की व्यक्तिगत कुशलता और योग्यता पर भी निर्भर होती है। सामाजिक जीवन के अनेक विषय इतने व्यापक और जटिल होते हैं कि किसी एक अवलोकनकर्ता द्वारा ही उनका समुचित रूप से अध्ययन नहीं किया जा सकता। ऐसी स्थिति में किसी समस्या अथवा क्षेत्र का अवलोकन करने के लिए एक ओर अनेक अवलोकनकर्ताओं अथवा अनुसन्धानकर्ताओं की आवश्यकता होती है तथा दूसरी ओर इन सभी अवलोकनकर्ताओं का अपने-अपने क्षेत्र में विशेषज्ञ होना आवश्यक होता है। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि **जब अवलोकन एक व्यक्ति द्वारा न होकर अनेक व्यक्तियों द्वारा सामूहिक रूप से किया जाता है तब अवलोकन के इस स्वरूप को 'सामूहिक अवलोकन'** (Collective Observation) **अथवा 'समूह अवलोकन'** (Group Observation) **कहते हैं।** कुछ विद्वानों ने सामूहिक अवलोकन के लिए अंग्रेजी के शब्द 'Mass Observation' का भी प्रयोग किया है।

सामूहिक अवलोकन की प्रकृति को स्पष्ट करते हुए **सिन पाओ येंग** (Hsin Pao Yang) ने लिखा है कि "सामूहिक अवलोकन नियन्त्रित तथा अनियन्त्रित अवलोकन का एक सम्मिश्रण है। यह अवलोकन अनेक व्यक्तियों द्वारा तथ्यों का अवलोकन करने तथा उनका आलेखन करने पर निर्भर होता है, यद्यपि सूचनाओं का संकलन तथा उनका प्रयोग एक केन्द्रीय व्यक्ति द्वारा किया जाता है।"[1] इस कथन से सामूहिक अवलोकन की तीन प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश पड़ता है—(1) सामूहिक अवलोकन का कार्य अनेक अनुसन्धानकर्ताओं द्वारा साथ-साथ किया जाता है, (2) इन अवलोकनकर्ताओं को घटनाओं का अवलोकन करने के क्षेत्र में पर्याप्त स्वतन्त्रता मिली रहती है लेकिन एक पूर्व-निर्धारित अवलोकन सूची (Observation Schedule) के आधार पर ही अवलोकन करने के कारण उनके व्यवहारों पर कुछ नियन्त्रण भी रहता है। इस दृष्टिकोण से सामूहिक अवलोकन में अनियन्त्रित और नियन्त्रित अवलोकन की विशेषताओं का समन्वय होता है तथा (3) सम्पूर्ण अवलोकन का कार्य अनेक स्तरों में विभाजित होता है। इसका तात्पर्य यह है कि विभिन्न विषयों के विशेषज्ञ अपने-अपने क्षेत्र से सम्बन्धित घटनाओं का अवलोकन करके संकलित सामग्री को एक केन्द्रीय कार्यालय में भेज देते हैं तथा किसी केन्द्रीय अधिकारी द्वारा ही उस सामग्री के आधार पर अन्तिम निष्कर्ष प्रस्तुत किये जाते हैं। वास्तविकता यह है कि अधिकांश सामूहिक अवलोकनों का आयोजन किसी सरकारी अथवा अर्द्ध-सरकारी संगठन द्वारा ही किया जाता है क्योंकि ऐसे अवलोकन के लिए एक बड़े प्रशासनिक-तन्त्र तथा आर्थिक साधनों की आवश्यकता होती है।

साधारणतया यह समझा जाता है कि सामूहिक अवलोकन एक महँगी विधि होने के कारण अविकसित और विकासशील देशों के लिए उपयुक्त नहीं है। इसके अतिरिक्त, सामूहिक अवलोकन के अन्तर्गत सभी अध्ययनकर्ताओं द्वारा निष्पक्ष रूप से घटनाओं का अवलोकन कर सकना भी कठिन होता है। इस दृष्टिकोण से जहाँ तक सम्भव हो सके, सामूहिक अवलोकन के उपयोग से बचना ही उचित है। वास्तविकता यह है कि सामूहिक अवलोकन के बारे में ऐसे सभी विचार बहुत भ्रमपूर्ण हैं। अब यह महसूस किया जाने लगा है कि सामूहिक अवलोकन से प्राप्त होने वाले निष्कर्ष कहीं अधिक व्यवस्थित और विश्वसनीय होते हैं। इसका कारण यह है कि जब विभिन्न अवलोकनकर्ता

1 "Mass observation is a combination of controlled and uncontrolled observation. Mass observation depends on the observing and recording to information by a number of people and the pooling and treatment of their contribution by a central person."—H. P. Yang, quoted by P. V. Young, *op. cit.*

Scanned with CamScanner

एक केन्द्रीय व्यक्ति को अपने द्वारा संकलित सामग्री भेजते हैं तो उन पर केन्द्रीय संगठन द्वारा पर्याप्त विचार-विमर्श किया जाता है। कोई भी तथ्य यदि सन्देहपूर्ण अथवा अस्पष्ट मालूम होता है तो घटनाओं का पुन: अवलोकन करके सन्देह का निवारण कर लिया जाता है। पुनर्परीक्षण की इस सम्पूर्ण प्रक्रिया के कारण सामूहिक अवलोकन से प्राप्त निष्कर्ष स्वाभाविक रूप से बहुत विश्वसनीय बन जाते हैं। वर्तमान युग में अन्तर-अनुशासन उपागम (Inter-disciplinary Approach) के आधार पर अनेक विषयों के विशेषज्ञों द्वारा संयुक्त रूप से अध्ययन करने का प्रचलन निरन्तर बढ़ता जा रहा है। इस स्थिति में केवल सामूहिक अवलोकन के द्वारा ही तथ्यों का उपयोगी रूप से संकलन कर सकना सम्भव है। इसका तात्पर्य यह है कि यदि एक ही विषय के सामाजिक, आर्थिक तथा मनोवैज्ञानिक पक्षों का अध्ययन साथ-साथ करना उपयोगी समझा जाता हो तो समाजशास्त्रियों, अर्थशास्त्रियों एवं मनोवैज्ञानिकों के एक दल द्वारा सामूहिक अवलोकन करके ही महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्राप्त किये जा सकते हैं। सामूहिक अवलोकन विभिन्न घटनाओं के बीच तुलना करने के दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण होता है। एक ओर इसमें नियन्त्रित अवलोकन की विशेषताओं का समावेश होता है तो दूसरी ओर सभी अवलोकनकर्ताओं पर एक-दूसरे का नियन्त्रण रहने के कारण इसके अन्तर्गत वैयक्तिक पक्षपात की सम्भावना भी स्वयं ही कम हो जाती है।

Scanned with CamScanner